Dated 29/06/2020 D.El.Ed 4th Sem 2018-20 Time 11:00-11:3

शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशासन

* संस्थागत नियोजन एवं प्रबन्धन - अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व

नियोजन एवं प्रबन्धन एक दूसरे के पूरक हैं और एक दूसरे का कोई अस्तित्व नहीं है। जब हम किसी कार्य को सुनियोजित ढंग से करने के लिए नियोजन करते हैं जो नियोजन के अनुसार कार्य को सम्पादित करना उचित प्रबन्धन के बगैर सम्भव नहीं है।

समाज मे विविध कार्यों के सुचारू रूप से संचालन हेतु अनेकों संस्थाएं कार्य करती हैं। ये संस्थाएं किसी न किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए स्थापित की जाती हैं। किन्हीं पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति तभी सम्भव है जबकि अपने उपलब्ध संसाधनों व शक्तियों के अनुसार एक सुविचारित योजना का निर्माण, उसका उचित क्रियान्वयन व प्रबन्धन किया जाए।

प्रत्येक संस्था चाहे वह राजनीतिक हो या शैक्षिक सामाजिक, आर्थिक या धार्मिक, उसकी सफलता, विकास व प्रगति की एक अनिवार्य शर्त है उस संस्था का समुचित नियोजन एवं प्रबन्धन। इससे उस संस्था की विशेषताओं का भी ज्ञान प्राप्त होता है। इसके अभाव में श्रेष्ठ उद्देश्यों को लेकर स्थापित संस्थाएं भी अपने लक्ष्य में सफल नहीं हो सकती हैं।

संस्थागत नियोजन एवं प्रबन्धन तीन शब्दों से मिलकर बना है।

1. संगठन / संस्था से सम्बन्धित या संस्था के बारे में।
2. योजना बनाना या योजनाबद्ध ढंग से।

Scanned with CamScanner

③ संसाधनों का अधिकतम उपयोग करते हुए योजना का समुचित क्रियान्वयन व लक्ष्य प्राप्ति हेतु समेकित प्रयास।

इस प्रकार स्पष्ट है कि संस्थागत नियोजन एवं प्रबन्धन से अभिप्राय है कि किसी भी संगठन या संस्था द्वारा अपने विकास व लक्ष्यों की पूर्ति के लिए योजना बनाना व उसका बेहतर क्रियान्वयन करना तथा इसके लिये सामूहिक रूप से सतत प्रयास करना।

① एक शैक्षिक संस्था द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भविष्य में प्राप्त होने वाले लाभों के आधार पर सुधार एवं विकास के दृष्टिकोण से बनाई गई योजना, उस संस्था की संस्थागत योजना है।

② संस्थागत योजना निर्माण राष्ट्र विकास में मील का पत्थर है तथा राष्ट्र की प्रगति का भविष्यगत द्योतक है।

③ प्रबन्धन के अन्तर्गत उद्देश्यों का प्रतिपादन करना, उनको प्राप्त करने हेतु नियोजन करना, संगठन स्थापित करना, कर्मचारियों की व्यवस्था करना, उन्हें निर्देश देना, समन्वित करना, उनके कार्यों का मूल्यांकन करना, नियन्त्रण करना, उन्हें प्रोत्साहन देना और सभी क्रियाओं में सामंजस्य स्थापित करना है।

④ प्रबन्धन मुख्य रूप से किन्हीं विशिष्ट उद्देश्यों के लिए प्रयासों को नियोजित, संगठित, समन्वित, अभिप्रेरित एवं नियन्त्रित करने की कला है।

नियोजन व प्रबन्धन में निम्न तीन प्रश्नों पर विचार किया जाता है कि-

Scanned with CamScanner

PAGE NO.
DATE / /

① हम कहाँ हैं ?
② हमें कहाँ पहुँचना है ?
③ हमें वहाँ तक कैसे पहुँचना है ?

HARVESH CHANDRA
ASSISTANT PROFESSOR
Shri Ram Institute of Education Sarjuk
thal Meetha Dampur Bijnor U.P.
29/06/2020. D. 4/2/1

Scanned with CamScanner